Akanksha - 02.08.2020

29/50

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का पर्याय द्वारा...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

1 A

मलखंब — मप्र राज्य का राजकीय खेल जिसे 9 अप्रैल 2013 में घोषित किया गया

→ योगेश मालवीय - प्रमुख मलखंब खिलाड़ी हैं, जिन्होंने द्रोणाचार्य पुरस्कार मिला है।

→ उज्जैन में मलखंब फेडरेशन स्थापित है

1 B

→ छत्तीसगढ़ को मप्र राज्य के 7 जिले स्पर्श करते हैं → सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट

1 C

→ जनगढ़ सिंह श्याम — प्रसिद्ध गोंड कलाकार

→ मप्र के डिंडौरी जिले से संबंधित

→ इनके सम्मान में मप्र सरकार ने 2007 में जनगढ़ सम्मान स्थापित किया।

1 D

→ मप्र में अनुसूचित जाति के लिए 4 लोकसभा सीटें आरक्षित की गई हैं -
(1) भिण्ड (2) टीकमगढ़ (3) देवास (4) उज्जैन

1 E

→ मप्र सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत पंजीकृत कार्यकारी निकाय

→ 2007 में स्थापना।

Scanned with CamScanner

1 F

→ मप्र के दक्षिण पूर्व में स्थित धारवाड़ चट्टानों का भाग है।

→ बालाघाट, जबलपुर, छिंदवाड़ा जिलों में अवस्थित

→ क्वार्टजाइट, ग्रीन स्टोन तथा मैंगनीज के निक्षेप।

KAUTILYA ACADEMY

1 G

→ मप्र के दक्षिण-पूर्व में विंध्याचल पर्वत श्रेणी से उद्गम

→ कर्क रेखा को दो बार काटती है।

→ मप्र, राजस्थान, गुजरात में बहती हुई खम्भात की खाड़ी में गिरती है।

1 H

→ मप्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश में चंबल नदी के क्षेत्र में विस्तृत

→ मप्र का सबसे बड़ा घड़ियाल अभ्यारण्य है।

→ स्थापना - 1979 में

1 I

→ आपातकाल के दौरान (1975-77) पीड़ित व्यक्तियों को सहायता हेतु स्थापित की गई थी।

→ वर्तमान में मप्र सरकार द्वारा इसको प्रतिस्थापित करके मप्र लोकतंत्र सेनानी सम्मान कानून 2018 लाया गया है।

Scanned with CamScanner

1 J → 24वें तीर्थंकर जैन महावीर के अहिंसा "सिद्धांत" के तहत समाज में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति या संस्था को दिया जाने वाला सम्मान

→ म.प्र. सरकार द्वारा स्थापित यह अलंकरण सम्मान है।

7

1 K → म.प्र. के बुन्देलखंड अंचल का प्रसिद्ध लोकगीत
→ बिना किसी वाद्य यंत्र के गायन
→ बंबुलिया या लमटेरा भी कहते हैं।

7

1 L → 1857 ई. की स्वतंत्रता लड़ाई में प्रमुख महिला ~~क्रांतिकारी~~ विद्रोही।
→ ~~राज्य हड़प नीति के विरुद्ध~~ अंग्रेजों की हड़प नीति का विरोध किया

7

1 M → प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता
→ म.प्र. सरकार ने ठक्कर बापा पुरस्कार स्थापित किया है।
→ हरिजन सेवक संघ तथा गोपालकृष्ण गोखले के संस्था के साथ कार्य किया।

6

1 N → म.प्र. व महाराष्ट्र राज्य की संयुक्त सिंचाई परियोजना है।
→ महाराष्ट्र के सिरपुर में बाघ नदी पर स्थित

Scanned with CamScanner

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

→ म.प्र. का बड़वानी जिला लाभान्वित है।

1 0

→ म.प्र. के निमाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध धार्मिक नृत्य

→ चैत्रमास में गणगौर पर्व के अवसर पर आयोजन।

→ ढोल और थाली के थाप पर

→ 2 प्रमुख शैलियाँ [illegible] व झालरिया

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

2. A

बुंदेलखंड केसरी के नाम से विख्यात राजा छत्रसाल शक्तिशाली बुंदेलखंड के संस्थापक थे। इनका जन्म टीकमगढ़ में हुआ। राजा छत्रसाल बुंदेला राजा चम्पतराय के पुत्र थे जिन्होंने राज्य की रक्षा करते हुये प्राण गंवा दिये।

पिता की मृत्यु के बाद राजा छत्रसाल ने अपने पिता के मित्र राजा जयसिंह से आधुनिक सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। उस समय जयसिंह औरंगजेब के दक्षिण अभियान में कार्यरत थे, तभी राजा छत्रसाल को बीजापुर के युद्ध (1665) में अपने सैन्य कुशलता को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। परंतु विजय का श्रेय मुगलो ने अपने नाम ही सीमित रखा। इसी दौरान राजा छत्रसाल की मुलाकात दक्षिण में शिवाजी से हुई जिन्होंने राजा छत्रसाल को बुंदेलखंड पुनः जीतने का हौसला दिया और राजा छत्रसाल ने शिवाजी से प्रेरणा लेकर मुगलो की सत्ता के खिलाफ लड़कर बुंदेलखण्ड राज्य को सशक्त बनाया। इसके पश्चात छत्रसाल ने महाराजा की पदवी धारण की।

इत यमुना, उत नर्मदा, इत चंबल, उत टोंस।
छत्रसाल सो लरन की, रही न काहू हौंस॥

प्रतापी राजा छत्रसाल के बारे में उपर्युक्त पंक्तियाँ सही बैठती हैं।

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

राजा छत्रसाल साहित्य प्रेमी व इसके संरक्षक थे अपने दरबार मे भूषण जैसे प्रसिद्ध कवि को संरक्षण दिया। 1676 मे पन्ना को बुंदेलखण्ड राज्य की राजधानी बनाया।

राजा छत्रसाल ने मराठो से मित्रता की मिसाल प्रस्तुत की और बाजीराव प्रथम की सहायता प्राप्त कर अपनी पुत्री मस्तानी का विवाह बाजीराव I से किया।

मध्य युग मे राजा छत्रसाल वीरता के प्रतीक बने तथा म.प्र के आधुनिक जिले छतरपुर का नाम राजा छत्रसाल की नगरी के कारण पड़ा।

Scanned with CamScanner

2 B

म.प्र. की विविध सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता एवं जनजातीय बहुलता ने विभिन्न बोलियों को जन्म दिया है।

बुंदेली, बघेली, निमाड़ी, मालवी, ब्रज, भीली इत्यादि म.प्र. की बोलियाँ हैं।

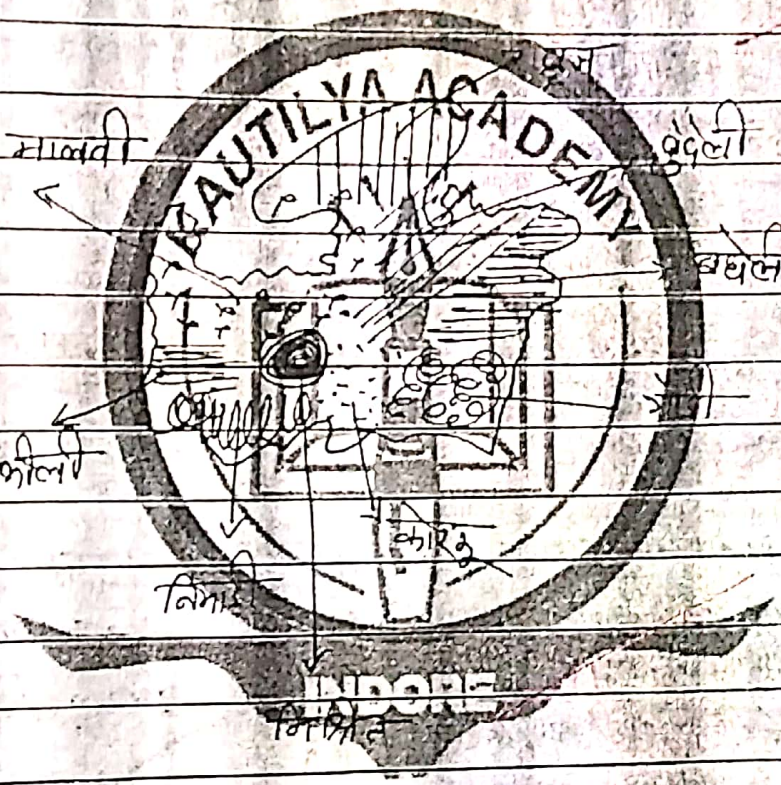

① बुंदेली → शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है।
→ ईसुरी प्रसिद्ध बुंदेली कवि थे।

② बघेली → पूर्वी हिंदी के अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई।

③ निमाड़ी → शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित
→ संत सिंगाजी प्रसिद्ध साहित्यकार हैं।

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(4) मालवी → राजस्थानी हिन्दी की सौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है

(5) बुंदेली → पश्चिमी हिंदी की प्रधान बोली है

(6) भीली, कोरकू, गोंडी → ये बोलियाँ क्रमशः भील, कोरकू व गोंड जनजातियों द्वारा बोली जाती है

2 (c) बुंदेलखंड के लोकनृत्य की लोक कला विरासत का अहम हिस्सा है।

बुंदेलखंड के लोकनृत्य

कानड़ा नृत्य
→ धोबी समाज द्वारा
→ भक्ति आधारित गायक के साथ
जन्म विवाह आदि विषय पर

बधाई नृत्य
→ स्त्री व पुरुषों द्वारा सामूहिक रूप से
शुभ अवसरों में शुभकामनाओं हेतु

सैरा
→ पुरुष प्रधान नृत्य
→ डंडा लेकर कृष्ण लीलाओं का प्रदर्शन
→ फसल कटाई नवीन के अवसर पर

राई
→ बुंदेलखण्ड का प्रसिद्ध नृत्य
→ "दामादर नृत्य" भी कहलाता है

ढिमरयाई
→ ढीमर जाति द्वारा
→ कथक के समान परिचालन

Scanned with CamScanner

अजंता, [illegible] [illegible], [illegible] और [illegible] आदि के [illegible] [illegible] और [illegible] भी [illegible] है [illegible] [illegible] को [illegible] करते हैं।

(5)

2 (b) मप्र में [illegible] काल से लेकर आधुनिक [illegible] के अवशेष विद्यमान [illegible]

जैसे सबसे प्राचीनतम भीमबेटका की गुफाएँ हैं [illegible] सन् 2003 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

भीमबेटका की गुफायें
→ आदिमानव द्वारा निर्मित [illegible] शैलचित्रों के लिए प्रसिद्ध (पूर्व पाषाण कालीन)

[illegible] की गुफायें
→ [illegible] में स्थित
→ 11वीं सदी में परमार राजाओं द्वारा निर्मित
→ रंगीन चित्रों के लिये प्रसिद्ध

उदयगिरि की गुफाएं
→ विदिशा; 5वीं सदी में निर्मित
→ हिंदू तथा जैन धर्म से संबंधित

बाघ की गुफायें
→ धार, बाघनदी तट पर
→ बौद्ध धर्म से संबंधित
→ अजंता से समरूप है।

Scanned with CamScanner

कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तरपुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

उदयगिरि की गुफाएं (सांची व विदिशा के मध्य), बाघ गुफाएं (धार जिला), पीडल की गुफाएं (मन्दसौर जिला), सिलोदिया की गुफाएं (ग्वालियर), तिगवाँ देवी की गुफाएं, चन्देरी आदि अन्य गुफाएं प्रसिद्ध हैं।

26

कोरकू जनजाति मुख्य रूप से सतपुड़ा पर्वत में पाई जाती है।

यह मुण्डा, मुण्डारी प्रोटो आस्ट्रेलियन जनजाति की एक शाखा है। ये राजपूतों को अपना पूर्वज मानते हैं।

मुख्य विशेषताएं

(1) सामाजिक स्थिति →
- पितृसत्तात्मक
- संयुक्त परिवार प्रणाली
- सगोत्र विवाह वर्जित
- समाज 2 वर्गों में विभाजित है।
  - (1) भूस्वामी (उच्च वर्ग)
  - (2) पोथरिया (निम्न वर्ग)

(2) सांस्कृतिक स्थिति →
गुड़ी पड़वा, दशहरा, दीपावली, होली, पोला आदि त्योहारों का आयोजन

③ धर्म → हिंदू देवी देवताओं की आराधना।
→ खूटम देव, डोंगर देव, भरुआ देव
→ जाति प्रथा प्रचलित है।
→ 'मृतकों' को दफनाकर स्मारक निर्माण की प्रथा जिसे "सिडोली" प्रथा भी कहते हैं।
→ प्रचलित है।

④ आर्थिक जीवन → पशुपालन, शिकार इत्यादि जीविका के साधन हैं।

कोरकू आदिवासी समुदाय की प्रमुख उपजातियाँ निम्नलिखित हैं —
मोवासी, बवारी, पथरिया आदि

2 f मप्र में मैंगनीज धारवाड़ क्रम की चट्टानों में ऑक्साइड के रूप में पाया जाता है।
म.प्र. में देश के कुल मैंगनीज का 33% उत्पादन होता है। साथ ही यहाँ देश का 13% मैंगनीज भण्डार है।

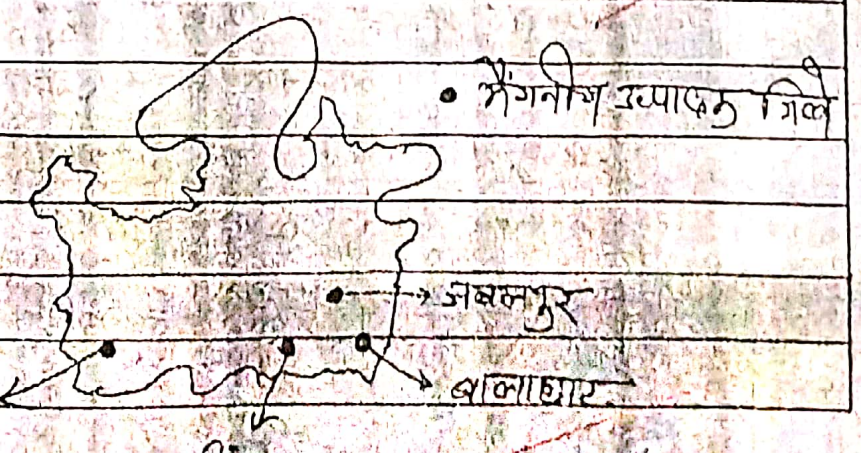

KAUTILYA ACADEMY INDORE
Scanned with CamScanner

[illegible] आजादी [illegible] वर्ष
[illegible] में
(3) आइएनए [illegible] कमेटी
[illegible] और ने

(4) [illegible]

(5) [illegible] की सामने
[illegible] सहान
[illegible] है।
[illegible] -विजयारा
[illegible] छीन ली।

उन्होंने [illegible] में [illegible] के ग्वालिया टैंक में आयोजित [illegible] कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित किया गया।

उसके बाद महात्मा गाँधी के करो या मरो के नारा से भारत छोड़ो आंदोलन की लहर सम्पूर्ण भारत में फैल गई।

आंदोलन की शुरुआत होते ही सभी महत्वपूर्ण नेताओं को तत्कालीन रूप से ही गिरफ्तार कर लिया गया।

म.प्र. के नेताओं ने भी भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

(Model Answer Sheet) कौटिल्य एकेडमी

[illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तथा [illegible] गया।

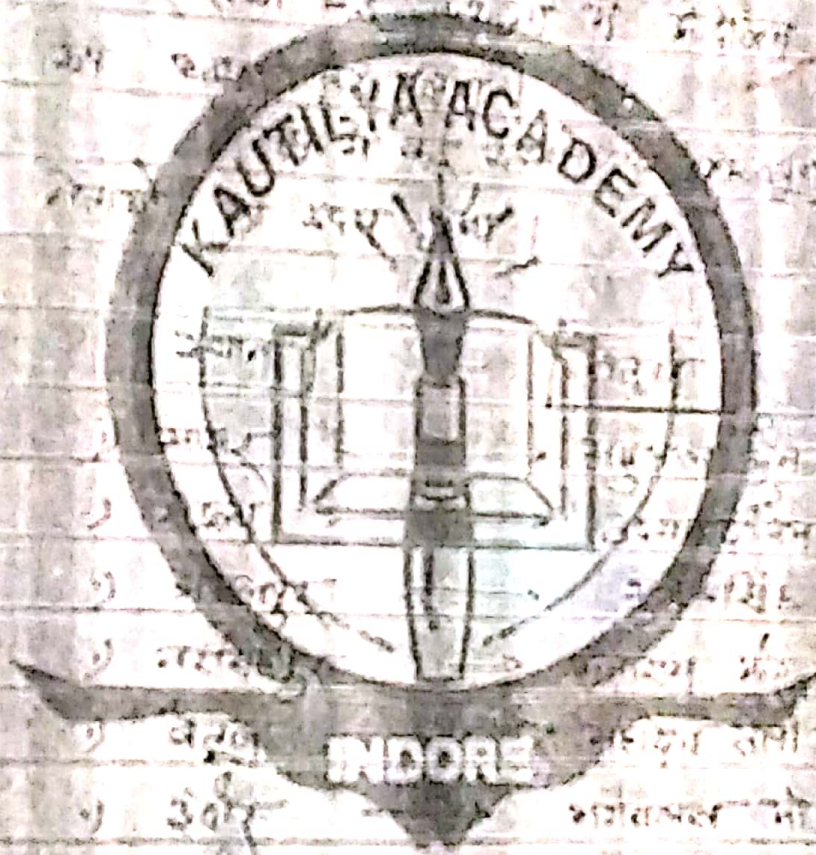

[illegible] [illegible]

KAUTILYA ACADEMY INDORE

[illegible] [illegible] [illegible]

- [illegible] → [illegible]
- [illegible] → [illegible]
- [illegible] → [illegible]
- [illegible] → [illegible]
- नरसिंहपुर → [illegible]
- [illegible] → [illegible]
- इंदौर → [illegible]
- भोपाल → [illegible]
- ग्वालियर → [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] ने [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] [illegible] की [illegible] से [illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भारत [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] रही।

सुभद्रा कुमारी चौहान —

आधुनिक हिन्दी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्वपूर्ण योगदान है। उनका जन्म इलाहाबाद में 1904 में हुआ तथा शिक्षा दीक्षा प्रयाग में भी सम्पन्न हुई।

विवाह के पश्चात खण्डवा निवास स्थान बना जहाँ [illegible] क्रान्तिकारी व कवि की माखनलाल चतुर्वेदी का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पति श्री लक्ष्मण सिंह के साथ स्वतन्त्रता आंदोलन में [illegible] से भाग लिया कई बार जेल भी गईं। [illegible] म. प्र. विधानसभा की सदस्या भी रह चुकी है।

अपनी ओजस्वी रचनाओं के माध्यम से स्वतन्त्रता आंदोलन को [illegible] किया तथा पारिवारिक जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकट किए।

विभिन्न रचनाएँ — झाँसी की रानी, वीरों का कैसा हो वसंत, बिखरे मोती आदि

ओजस्वी कवियित्री, प्रेरणादायी लेखिका, क्रांतिकारी महिला के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का सबसे आसान रास्ता...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

भित्तिचित्र की विशेषताएँ —

1) संझा – किशोरियों द्वारा श्राद्ध पक्ष में दीवार पर प्राकृतिक पदार्थों से निर्मित

2) चित्रावण – चितेरे जाति द्वारा विवाह [illegible] पर

3) [illegible] – निमाड़ में [illegible] सप्तमी या [illegible] के अवसर पर हल्दी गेरू, गोबर से निर्मित

4) [illegible] – विवाह के समय

5) [illegible] – दीपावली के अवसर पर

6) [illegible] – नवरात्रि के समय अविवाहित [illegible] द्वारा

7) कोहबर – विवाहित युगल द्वारा पूजन

8) छठी चित्र – शिशु के जन्म के 6वे दिन.

भित्ति चित्र, दीवारों पर उकेरे जाते हैं ये लोकसंस्कृति के सौंदर्य, धार्मिक आस्था तथा प्रेम का प्रतीक माने जाते हैं।

प्रश्न संख्या
मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)
कौटिल्य एकेडमी

3 A

म.प्र. में पर्यटन के विभिन्न स्वरूप विद्यमान है। स्थानीय पर्यटन स्थलों के साथ-साथ यहाँ विश्व विरासत स्थल म.प्र. को पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध करते हैं।

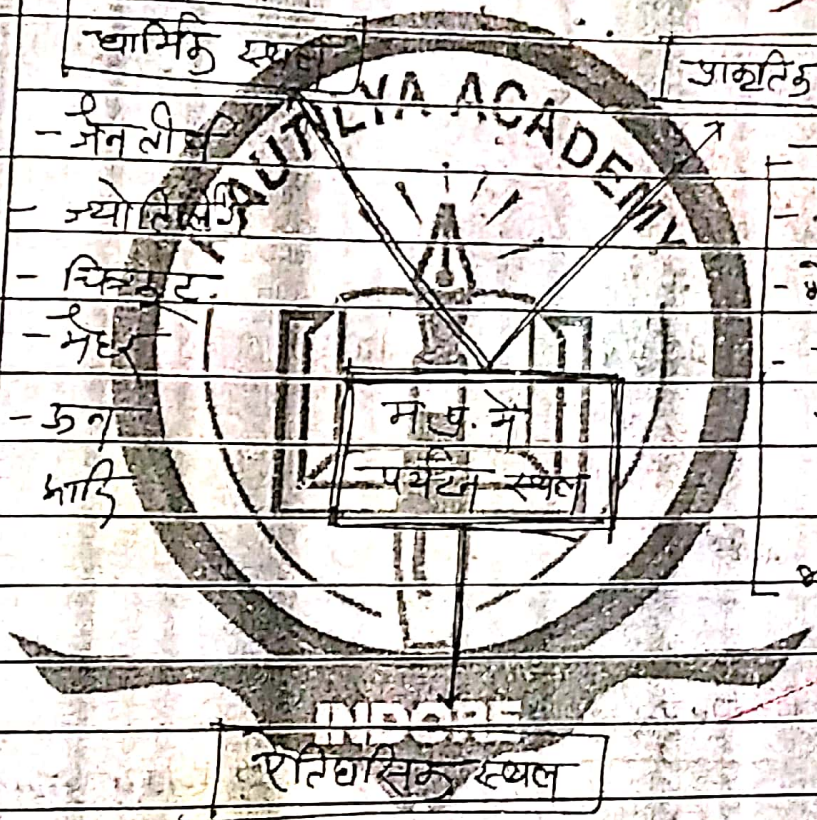

म.प्र. में पर्यटन स्थल

धार्मिक स्थल
- जैन तीर्थ
- ज्योतिर्लिंग
- चित्रकूट
- मैहर
- ऊन
- आदि

प्राकृतिक स्थल
- पचमढ़ी
- अमरकंटक
- भेड़ाघाट
- मांडू की पहाड़ियाँ आदि
- भीमबेटका की गुफायें (2003)

ऐतिहासिक स्थल
- → खजुराहो के प्रसिद्ध मंदिर (1986 में विश्व धरोहर घोषित)
- → बाघ की गुफायें (प्रागैतिहासिक)
- → सांची के स्तूप (1989 से विश्व विरासत घोषित)
- → भरहुत स्तूप
- → मांडू के ऐतिहासिक स्थल
- → विभिन्न कालों में निर्मित किला जैसे ग्वालियर किला, असीरगढ़ किला इत्यादि

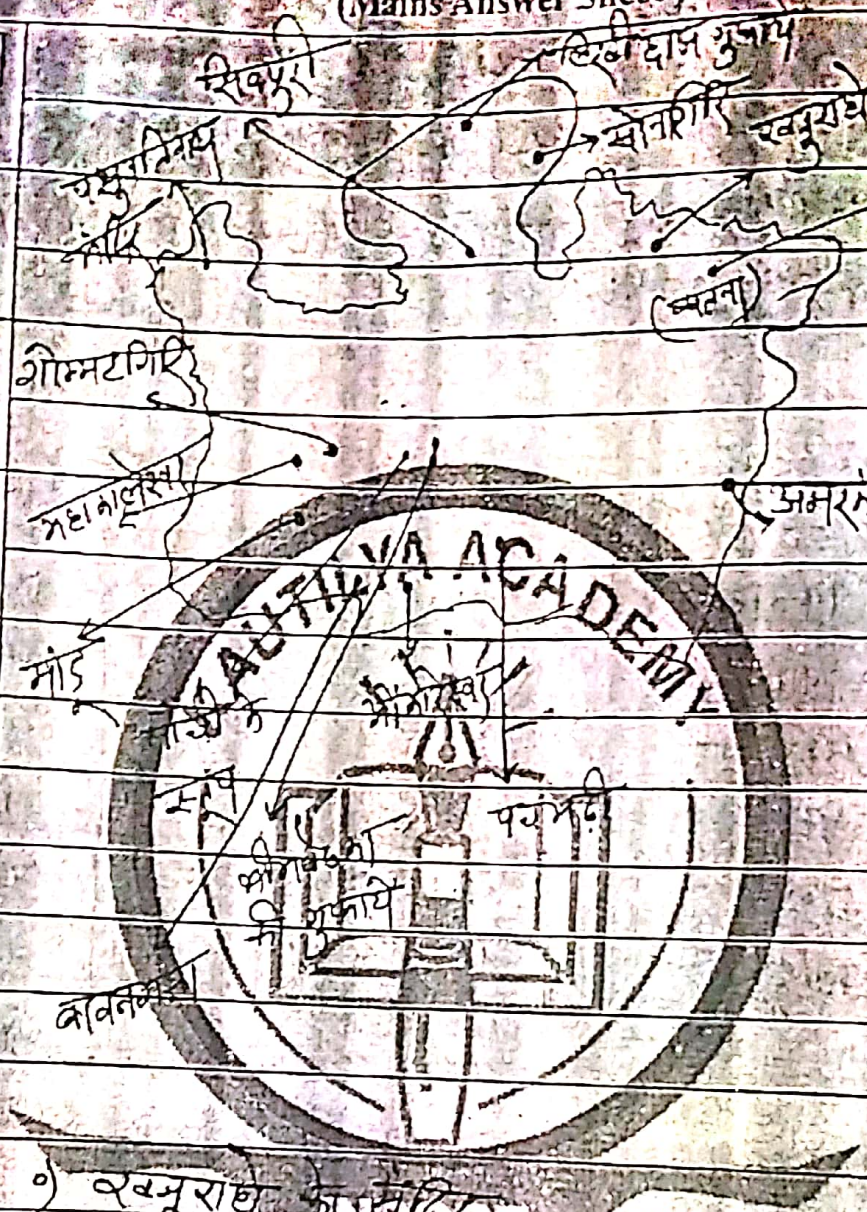

कौटिल्य एकेडमी

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

1) खजुराहो के मंदिर → ये विश्व प्रसिद्ध मंदिर म.प्र. के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो में निर्मित ~~स्थापित~~ किये गये 22 वीं शताब्दी से संबंधित है।

→ चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित

→ इन्हे तीन समूहों में विभाजित किया गया है। पश्चिमी समूह के प्रसिद्ध मंदिर है → कंदरिया महादेव, चौंसठ योगिनी, मतंगेश्वर, विश्वनाथ इत्यादि।

प्रत्येक समूह के मंदिरों की अपनी अलग-अलग विशेषताएं हैं।

खजुराहो के मंदिर भारतीय स्थापत्य एवं शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

•) साँची के स्तूप →

[illegible] रायसेन जिले में अवस्थित [illegible] साँची में अशोक ने [illegible] 1818 में जनरल टेलर ने [illegible] प्रसिद्धि [illegible] इसको [illegible] 1989 में विश्व विरासत [illegible] घोषित

•) माण्डू

धार जिले में नर्मदा किनारे स्थित [illegible] विंध्याचल [illegible] में [illegible] और [illegible] के [illegible] विख्यात

→ [illegible] व ऐतिहासिक व प्राकृतिक विरासत स्थल

→ प्रतीक → रानी रूपमती व राजा बाज बहादुर की अमर प्रेम गाथा का

प्रमुख स्थल → अशरफी महल, हिंडोला महल, जहाज महल, दिल्ली दरवाजा, रानी महल इत्यादि

KAUTILYA ACADEMY

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार

मांडू को सिटी ऑफ जॉय तथा महलों की नगरी के नाम से जाना जाता है।

•) भीमबेटिका की गुफायें –

रायसेन जिले में स्थित

→ आदिमानव द्वारा निर्मित बने शैलचित्रों के लिए प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक गुफायें

→ यूनेस्को द्वारा 2003 में विश्व विरासत स्थल घोषित

→ खोज – डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर

•) ओंकारेश्वर तथा महाकालेश्वर →

ये दोनों क्रमशः खण्डवा तथा उज्जैन में स्थित भारत के प्रसिद्ध 12 ज्योतिर्लिंगों में से 2 ज्योतिर्लिंग हैं।

•) बावनगजा → बड़वानी जिले में स्थित प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है।

→ यहाँ प्रति 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक का आयोजन होता है।

अन्य जैन तीर्थ स्थल – मुक्तागिरि, सोनागिरि, कुण्डलपुर, पुष्पगिरि, गोम्मटगिरि

KAUTILYA ACADEMY INDORE

म.प्र. मे अवस्थित पर्यटनो की यदि गणना मात्र की जाये तो यह 300 से अधिक है जिनमे से 20 पर्यटन केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

पर्यटन क्षेत्र आर्थिक विकास में सहायक होते है। इसलिये म.प्र. सरकार को चाहिए कि वह इनके संरक्षण एवं संवर्धन मे पर्याप्त ध्यान देकर सुविधाओ से युक्त करे। ताकि इनकी प्रसिद्दि से राज्य की आय वृद्धि के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार की उपलब्धता प्राप्त हो।

10

3 (b)

मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में आदिवासी एवं ग्रामीण जनसंख्या का बाहुल्य होने के कारण विभिन्न तरह के शिल्प कलाओं की उत्पत्ति हुई है।

मिट्टी शिल्प –

धार, झाबुआ, सीधी, सतना, बैतूल, मंडला आदि क्षेत्रों में

– टेराकोटा → पकी मिट्टी से निर्मित शिल्प

→ गोंड तथा बैगा जनजाति द्वारा

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) कौटिल्य एकेडमी

टेराकोटा शिल्प (मिट्टी) / आदिवासी तथा सामाजिक आधार - प्राचीन माने हैं।

धातु शिल्प —

→ अस्त्र, आभूषण, देवी देव प्रतिमाओं का निर्माण (टीकमगढ़, बैतूल)

पीतल व तांबे की कलात्मक वस्तुएं (शिवानी दातियापुर)

→ कांसे की अष्टधातु - प्रकाश का प्रसिद्ध पात्र

काष्ठ शिल्प — म.प्र. की अति प्राचीन शिल्प

— कोरकू तथा भील आदिवासियों का महत्वपूर्ण योगदान है

— गाड़ी के पहिए, दरवाजे, मूर्तियाँ आदि

कंघी शिल्प — बंजारा जनजाति का व्यवसायिक शिल्प

— केन्द्र — नीमच, रतलाम, उज्जैन

छीपा शिल्प — हाथ द्वारा कपड़े पर छाप छीपा शिल्प कहलाती है।

— भील आदिवासियों द्वारा जनजातीय प्रतीकों का अंकन होता है।

— उज्जैन का छीपा शिल्प 'भैरूगढ़' के नाम से विश्वप्रसिद्ध है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी

वस्त्र शिल्प — म.प्र. में वस्त्र शिल्प साड़ी कला के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त है।
- चंदेरी साड़ी व महेश्वरी साड़ी सर्वोत्तम वस्त्र शिल्प है।
- ये साड़ियाँ सूती व रेशमी दोनों ही प्रकार के धागों से पक्के रंग से निर्मित की जाती है।

हस्तशिल्प — म.प्र. में दरी, कालीन, जूटशिल्प आदि हस्तशिल्प के तहत आते हैं।
- केन्द्र - ग्वालियर, शाजापुर, झाबुआ

बाँस शिल्प — झाबुआ व मंडला जिले के आदिवासियों द्वारा
- टोकरी तथा अन्य उपयोगी वस्तुएं निर्मित की जाती है।

पत्थर शिल्प — पत्थरों पर नक्काशी
- मंदसौर तथा रतलाम की भील, गुर्जर, गायरी जनजातियों का प्रमुख शिल्प।

पत्ता शिल्प — पत्ता शिल्प के कारीगर मुख्य रूप से झाड़ू निर्मित करते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

भीली शिल्प – मुख्यतः भील जनजाति की महिलाओं का लोकशिल्प

→ वस्तुएँ – गुरना, मोतीमाला, पेटियाँ

नारब शिल्प – प्रदेश की नरवार जनजाति द्वारा चुड़े, कलात्मक खिलौने, श्रृंगार पेटियाँ आदि वस्तुओं का निर्माण

कठपुतली शिल्प – यह प्रदेश के लगभग सभी अंचलों में प्रचलित शिल्प है।

मध्यप्रदेश में लोकशिल्प की अप्रतिम विरासत विद्यमान है जो आज के समय में संरक्षण की मोहताज है। लोकशिल्प जनजातियों की आय में वृद्धि कर सकती है यदि उसे सही मंच प्रदान किया जाये।

म.प्र. में लोकशिल्प को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने के लिये राज्य स्तर पर ऑनलाइन पोर्टल जैसे मंचों को प्रस्तुत करना होगा जिससे वस्तुओं की खरीद-बिक्री के साथ ही हमारी सांस्कृतिक विरासत को एक नई पहचान मिल सके।

10

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या 2 I

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सुभद्रा कुमारी चौहान।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्वपूर्ण योगदान है। इनका जन्म इलाहाबाद में 1904 में हुआ तथा शिक्षा दीक्षा प्रयाग में ही सम्पन्न हुई।

विवाह के पश्चात खण्डवा निवास स्थान बना जहां प्रसिद्ध पत्रकार व कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्य प्राप्त हुआ।

पति श्री लक्ष्मण सिंह के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में जोर शोर से भाग लिया कई बार जेल भी गई। ~~स्वतंत्रता के पश्चात~~ म.प्र. विधानसभा की सदस्य भी रह चुकी है।

अपनी ओजस्वी रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को स्फूर्त किया तथा पारिवारिक जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रकट किया।

विभिन्न रचनाएं - झाँसी की रानी", वीरों का कैसा हो वसंत, बिखरे मोती आदि

ओजस्वी कवियित्री, प्रेरणादायी लेखिका, क्रांतिकारी महिला, के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।